# बिरज

## भासा में पढ़बे और लिखबे की कहानी की दूसरी किताब

**बिरज भासा में पढ़बे और लिखबे की कहानी की दूसरी किताब**
**(Reading and Writing in Braj: Primer Story Book-2)**

सामन किरस्न पक्छ बिकरम सम्बत 2075 (अगस्त 2018)
छपबे बारी किताबन की गिनती: 200

**© निर्माण सोसायटी**

**तईयार करबे बारे**
जगदीश चन्द नैहचैनिया, सतवीर चौधरी, रतन लाल योगी
दिनेश चन्द, राजेश भारती, जगराम और रतन सिंह

**संग दैबे बारे**
मुकेश कुमार, शैला डिसौजा, फेबा जोस और मुकेश कुमार योगी

**टाइप करबे बारौ**
रतन लाल योगी

**पिरकासन**

**निर्माण सोसायटी**
सहारई रोड़, ब्लू बर्ड स्कूल के पास, डीग,
भरतपुर, राजस्थान-321203
Email-rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
Web.-www.nirmaan.org.in
Ph.05641-224424

**सब अधिकार सुरक्षित हैं**
प्रकाशक की अग्रिम लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग आण्विक, यांत्रिकी, रिकॉर्डिंग व अन्य किसी भी रूप में या अन्य माध्यम से पुन: उत्पादित नहीं किया जा सकता है और न ही पुन:प्राप्ति पद्धति में इसका भंडारण किया जा सकता है या प्रसारित किया जा सकता है।

# बिरज भासा में पढ़बे और लिखबे की कहानी की दूसरी किताब

बिरज भासा की दूसरी पिरबेसिका किताब के संग-संग एक कहानी की किताब भी हौनौ जरुरीय। जो सब्द या किताब में आये हैं, जो तुमनै पहली किताब में सीखे हैं। ई कहानी की किताब हम जो पहली कक्छा में लिंग्गे, जाकौ मतलब है कि मास्टर पढाबे में कहानी सुनाबैगौ। कहानी की किताब में जो भी पढायौ जारौय बाय सीक जायेंगे। कहानी की किताब में जो सब्द आये हैं, उन्नै अच्छी तरीका ते पढनौ सिखाबै। जाकी बजै ते या किताबै काम में लैमैं। जाते जो पढबे बारे को वा सब्द कौ अर्थ समझ में आ सकै और या किताब में सबरी कहानीन की फोटू भी हैं। जाते पढबे बारे समझ सकैं। यामें लिखौय कि पढबे बारे के मन में रुचि जाग सकै। जो खास सब्द या कहानी में आये हैं वो खास सब्द पहली किताब में लै लिये गये हैं। ये सबरी कहानी अपने बिरज इलाके की रीति-रिवाज, परम्परा और रहन-सहनै दरसामैं और ये सबरी कहानी अपनी बिरज भासा में लिखी गई हैं। या किताब कौ मकसद ईयै कि पढबे बारे जो पढायौ जारौय ऊ सई तरै ते समझ में आ सकै और जादा ते जादा लोग पढे-लिखे है जांय।

# पाठ–1
# एक जादू कौ खेल

**मटर** **डमरू** **भगौना**

एक राजा की रानी कोई नगर में **डमरू** कौ खेल देखबे गई। वहां पै **डमरू** कौ खेल हैरौ तौ **डमरू** बारे नै एक **भगौना** रीतौ रख राखौ। **डमरू** बारौ बोलौ सभी देखबे बारेऔ या **भगौना** में कछू भी तौ नाय। तो उन्नै कहीं **भगौना** बिलकुल रीतौय। तौ नैकदेर डटकैं **डमरू** बारे नै जादू ते **भगौना** में **मटर** भरदी। रानी नै **मटर** हात में लई और **मटर** खाकैं देखी तौ वे असली **मटर** ई। रानी नै **डमरू** बारे कूं पईसा दैकैं एक **भगौना मटर** खरीद ली और राजा कूं दिखाबे काजैं महल में लै आई।

# पाठ–2

## दो यार

**थन** **चक्कू** **क्यारी**

दो यार राम और स्याम उन दोनून में खेत की **क्यारी** में **चक्कू** पै लडाई हैगी। एक दिना राम नै अपनी भैंस स्याम की **क्यारी** में चरबे छोड दी। तौ स्याम नै भैंस कौ **थन चक्कू** ते काट दियौ और **क्यारी** में ते भगा दी। जब बानै भैंस कौ दूद काढौ तौ **थन** में ते खून निकलरे। अब कछू दिना डटकैं स्याम नै अपनी भैंस राम की **क्यारी** में चरबे छोड दी। तौ राम नै भैंस कौ **थन** काट **चक्कू** ते दियौ और **क्यारी** में ते भगा दी। जब बानै भी दूद काढौ तौ **थन** में खून निकलरे। ऐसें-ऐसें दोनू जनेन में जादा लड़ाई बढगी। फिर दोनू जने गांम बारेन्नै समझाये।

# पाठ–3

## पचास रुपया की बात

**घंटी** **मग्गा** **दरबज्जौ**

एक किसान **घंटी** और **मग्गा** लैबे बजार कूं गयौ। ऊ सेठ की दुकान के **दरबज्जे** पै पोंहचगौ। बानै देखौ तौ सेठ की दुकान के **दरबज्जे** पै दोनौं ओर **घंटी** और **मग्गा** रखे। किसान **घंटी** और **मग्गा** देखकैं अपने मन में खुस हैगौ। बानै सेठ ते कही सेठ जी दुकान के **दरबज्जे** पै **घंटी** और **मग्गा** रखे हैं इन्नै कितने कौ देगौ। सेठ जी बोलौ जो **दरबज्जे** के दोनूं ओर **घंटी** और **मग्गा** रखे हैं केवल पचास रुपया में हैं। किसान नै पचास रुपया दिये और **दरबज्जे** के दोनूं ओर रखे **घंटी** और **मग्गा** लै आयौ।

# पाठ–4

## छतरी कौ आनंद

**छतरी** **बच्चा** **कच्छा**

एक **बच्चा** कौ जन्म हुयौ। तौ **बच्चा** कौ नाना बाकूं **कच्छा** और **छतरी** लायौ। पर **कच्छा** बडौ जादा आगौ। तौ **कच्छा** पहरायौ नाओ। अब कैई साल डटकैं **बच्चा** जब बडौ हैगौ तौ **कच्छा** पहरकैं और **छतरी** ओड कैं **छतरी** कौ आनंद लैतौ। जब कभऊ भी मेह बरसतौ तौ **बच्चा** **कच्छा** पहरकैं और **छतरी** ओड कैं मेह कौ आनंद लैतौ। **बच्चा** नै कैई साल अपने नाना की **छतरी** और **कच्छा** कौ सौक करौ।

# पाठ–5

## ईमानदारी

**ढक्कन** **कट्टी** **लड्डू**

कोई गरीब गैलारे एक कट्टा पायौ। ऊ बा कट्टाय अपने घर लै आयौ। गैलारे नै कट्टा खोलकैं देखौ तौ बामें **लड्डू, कट्टी** और **ढक्कन** निकरे। **ढक्कन** पै कट्टा बारे कौ नाम लिखरौ। गैलारौ **ढक्कन, कट्टी** और **लड्डू** के कट्टाय लैकैं कट्टा बारे के घर चल दियौ। कट्टा बारे नै गैलारे की ईमानदारी देखकैं **ढक्कन कट्टी** और **लड्डू** कौ कट्टा बाकूं दै दियौ।

# पाठ–6

## खर की सानी

**खर** **पत्ता** **गद्दा**

एक मांईस भैंस राखैऔ। ऊ अपनी भैंस की टैम ते सेवा करैऔ। **खर** की सानी करैऔ और संग में नीम के **पत्ता** डार दैबैऔ। एक दिना **खर** बीतगी तौ ऊ **खर** बारे की दुकान पै बजार कूं गयौ। बानै वहां ते **खर** खरीद ली। फिर ऊ अपने काजें **गद्दा** बारे की दुकान पै गयौ। बानै दुकान पै रुई कौ **गद्दा** पसंद करौ और **गद्दा** खरीद कैं घर कूं आगौ। फिर ऊ **खर** और **गद्दाय** घर धरकैं जंगल कूं नीम के **पत्ता** तोरबे चलेगौ। फिर नीम के **पत्ता** लाकैं जब बानै **खर** की सानी भैंस कूं करी।

# पाठ–7

## पजम्मा फटगौ

**झार** **कन्नी** **पजम्मा**

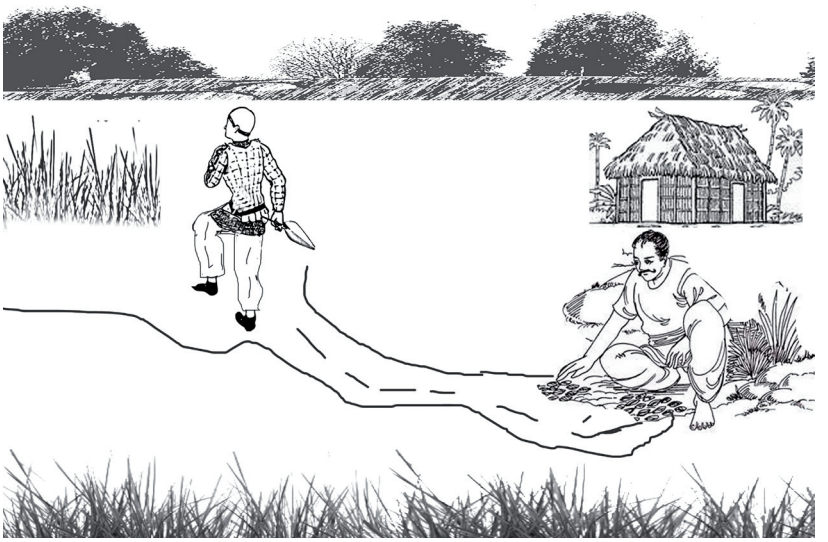

एक कारीगर बेर भौत खाबैऔ। ऊ रोजीना अपनी **कन्नी** लैकैं जंगल कूं जाबैऔ और **झार** में ते **कन्नी** ते बेर झराकैं बेर खाबैऔ। तौ एक दिना ऊ **झार** में ते बेर खाबे गयौ। तौ ऊ **झार** में ते **कन्नी** ते बेर झरा-झराकैं खारौ तौ बाकौ **पजम्मा** झार में इरजगौ तौ ऊ **झार** में **कन्नी** मारै पर बाकौ **झार** में ते **पजम्मा** ना छूटै। फिर हारकैं बानै **पजम्मा झार** में ते जोर ते खींचौ तौ बाकौ **पजम्मा** फटगौ। फिर बाय भौत दुख हुयौ।

# पाठ–8

## प्याज की बारी

**फरसा** **चप्पल** **प्याज**

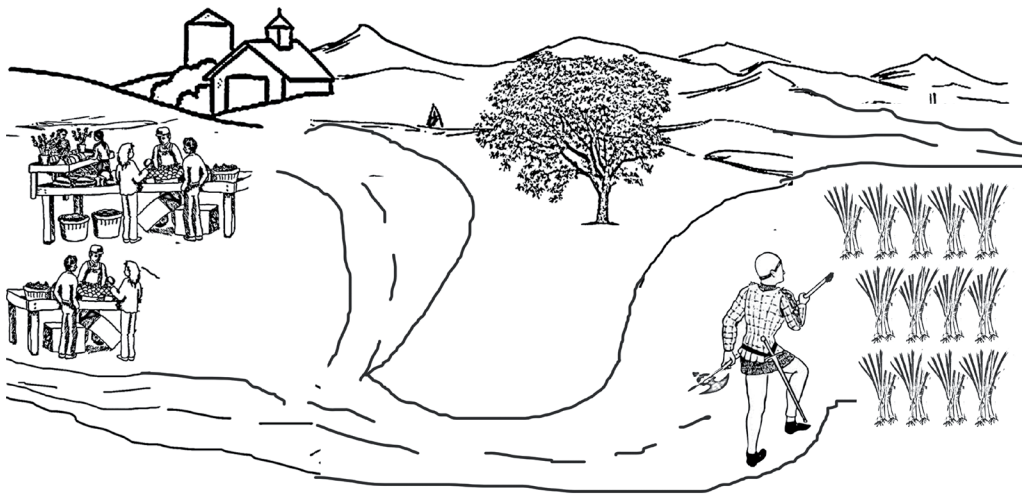

एक जिमींदार नै खेत पै **प्याज** की बारी लगाई। **प्याज** की रखबारी कूं खेत पै जातौ। एक दिना बाकी **चप्पल** टूटगी तौ ऊ **चप्पल** लैबे बजार कूं गयौ और बजार ते **फरसा** भी लै आयौ। जब ऊ जंगल कूं जातौ तौ नई **चप्पल** पहरकैं और संग में **फरसा** लैकैं जातौ। जाते रात में कोई **प्याज** की बारी में आबैगौ तौ **फरसा** काम में तौ आबैगौ। एक दिना **प्याज** लैबे रात में चोर आगे तौ ऊ **चप्पल** पहरकैं और हात में **फरसा** लैकैं उनके पीछैं भागौ। तौ चोर **फरसा** देखकैं भग्गे।

# पाठ–9

## ठेली के दाम

**ठेली** **डिब्बा** **कब्जौ**

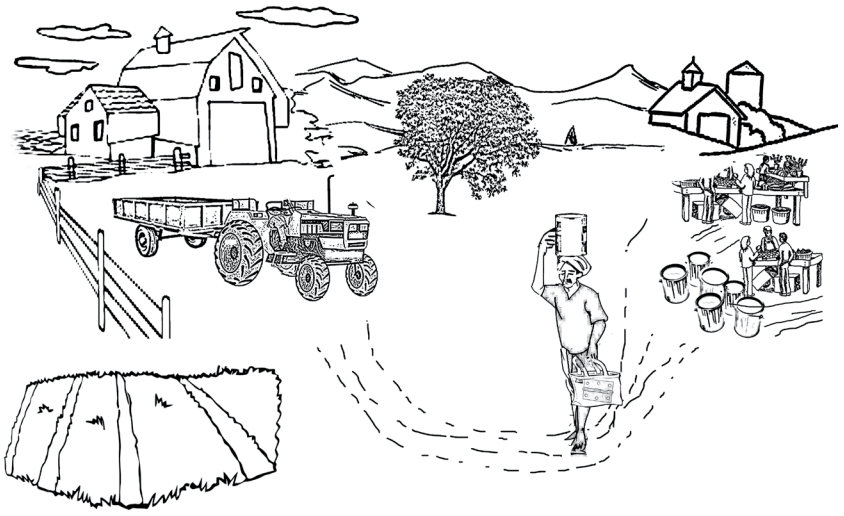

एक टैक्टर बारौ कोई पै ते पुरानी **ठेली** लैकैं आयौ। बा **ठेली** में दो तीन जिगह **कब्जे** नाये तौ ऊ बजार ते नये **कब्जे** लाकैं बानै **ठेली** के टूल में **कब्जे** लगबा दिये। फिर ऊ बजार ते कारे रंग कौ **डिब्बा**, हरे रंग कौ **डिब्बा**, पीरे रंग कौ **डिब्बा** ऐसैं ऊ पांच-छै तरै के रंग के **डिब्बा** खरीद लायौ और बानै **ठेली** अलग-अलग रंगन ते पुतबा दी। फिर ऊ **ठेली** बानै मंहगे दामन में बेक दी।

# पाठ–10

## मेले में धनुस की दुकान

**धनुस** **गुल्लक**

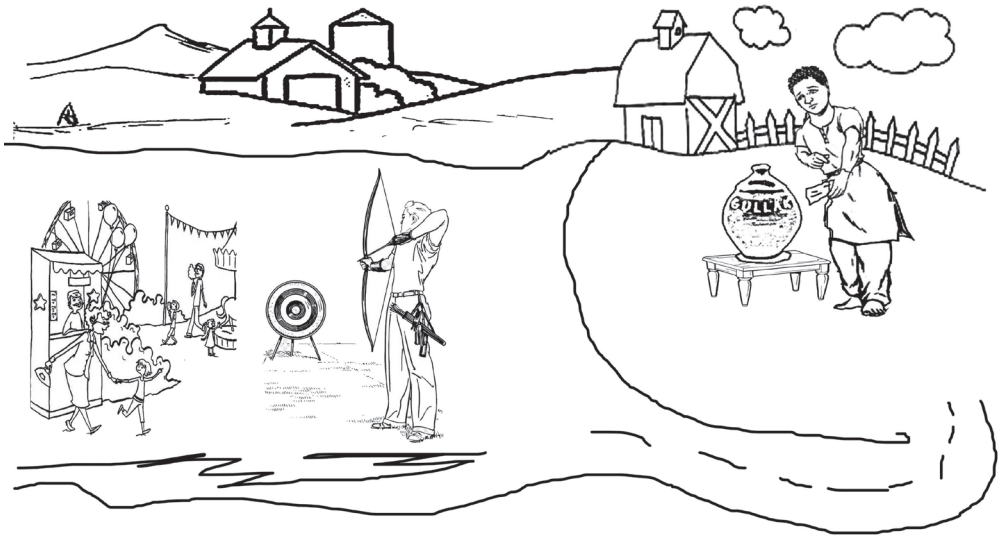

एक गरीब घर कौ बालक मेले में कोई सेठ की दुकान पै **धनुस** ते तीर चलाबे सीखबे जातौ। ऊ धीरैं-धीरैं **धनुस** ते तीर चलाबौ सीकगौ। फिर ऊ मेले में **धनुस** ते पईसा कमाबे लग्गौ तौ ऊ एक **गुल्लक** लै आयौ। रोजीना मेले में ते पईसा कमाकैं लातौ और **गुल्लक** में डार दैतौ। भौत दिना डटकैं बानै **गुल्लक** फोरी तौ बामें गल्लेन पईसा निकरे। फिर बानै **गुल्लक** के पईसान ते खुद की **धनुस** की दुकान खोल्लई।

# पाठ–11

## ईमानदार मजदूर

**पहाड़ कस्सी बस्ता**

एक मजदूर **कस्सी** लैकैं **पहाड़** पै काम करबे जातौ। एक दिना ऊ **कस्सी** लैकैं **पहाड़** पै जारौ तौ बाय गैल में एक **बस्ता** पायौ। बानै **बस्ता** खोलकैं देखौ तौ बामें सौने-चांदी की चीज निकरी और एक कौफी निकरी बामें सेठ कौ नाम लिखरौ। मजदूर नै पहलैं **कस्सी** ते **पहाड़** पै काम करकैं और **कस्सीय पहाड़** पै धरकैं सेठ कूं **बस्ताय** पोंहचाबे गयौ। तौ सेठ नै बाते पूछी काह काम करै बेटा? मजदूर बोलौ **कस्सी** लैकैं **पहाड़** पै खुदाई कौ काम करुं। सेठ नै बाकी ईमानदारी देखकैं ऊ **बस्ता** मजदूर कूं दै दियौ।